सोजॉर्नर ट्रुथ

गुलामी के खिलाफ एक गुलाम की आवाज

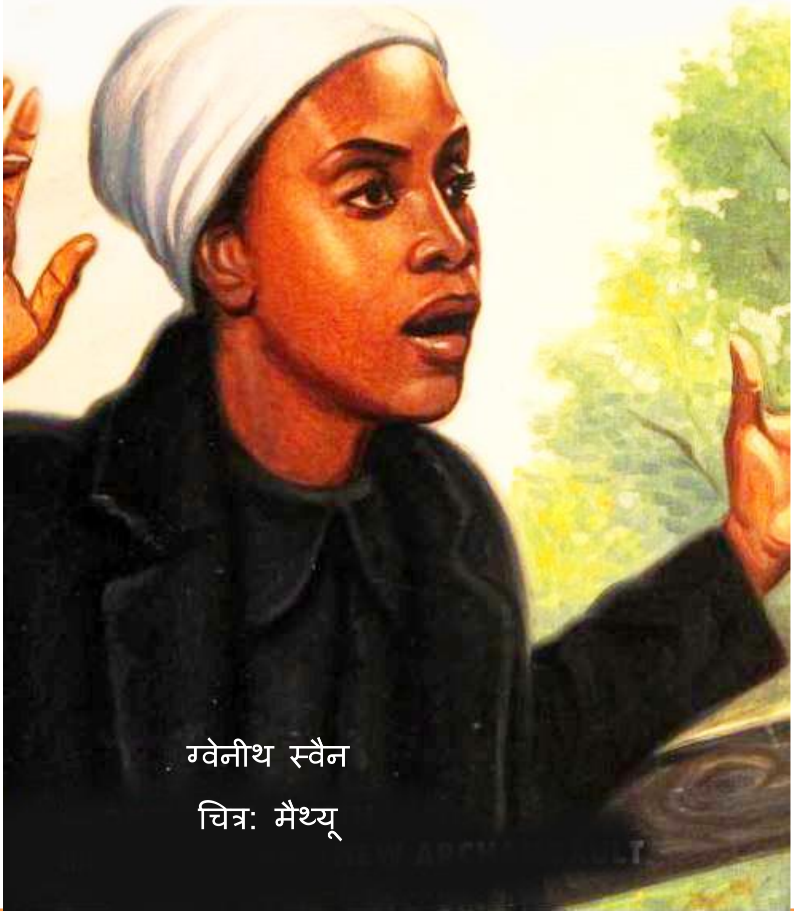

सोजॉर्नर ट्रुथ

गुलामी के खिलाफ एक गुलाम की आवाज

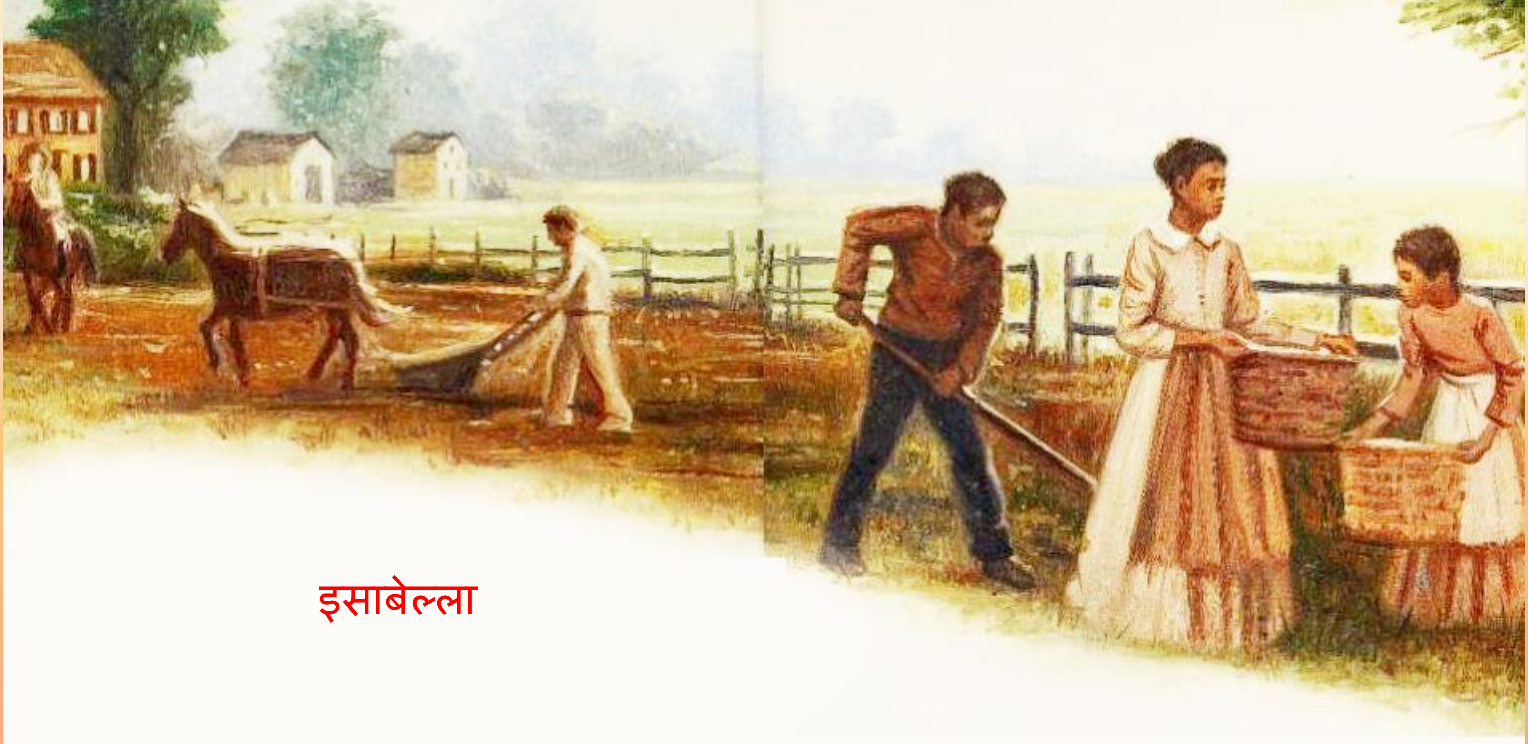

इसाबेल्ला

इसाबेला का जन्म 1797 के आसपास हुआ था. लोगों ने उसका छोटा नाम "बेल" रखा था. लेकिन उसके बारे में कुछ भी छोटा नहीं था. वो अपने पिता की तरह लंबी और ऊंची थीं. उसके पिता को लोग, "बोमेफ्री" बुलाते थे जो पेड़ के लिए डच शब्द है.

बेल की मां को माउ-माऊ (उन्माद के लिए डच) और बेट्ट (एलिजाबेथ के लिए छोटा) बुलाते थे. बेल के कई भाई-बहन थे. लेकिन उसका भाई पीटर ही केवल उसके, बोमफ्री और माउ-माऊ के साथ रहता था.

बेल परिवार जिस घर में रहता था वो उनका खुद का नहीं था.

उनके पास खाने और सोने के लिए पक्का फर्श तक नहीं था. चार्ल्स हार्डेनबर्ग, बेल और उसके परिवार का मालिक था.

चार्ल्स हार्डेनबर्ग, उनका मालिक था जैसे वो हर्ले, न्यूयॉर्क में एक बड़े पत्थर के घर का मालिक था.

वो उनका उसी प्रकार मालिक था जैसे वो भेड़ों के बड़े झुंड का मालिक था.

वो उनका वैसे ही मालिक था जैसे वो अपने लंबे पूंछ वाले कोट और चौड़ी टोपी का मालिक था. बेल और उसका परिवार मालिक के गुलाम थे. वे डच भाषी दास थे और वे न्यूयॉर्क राज्य के, डच हिस्से में रहते थे.

सर्दियाँ लंबी थीं.

पास की हडसन नदी में बर्फ जमी थी.

गर्मी वहाँ कम समय के लिए ही होती थी.

लेकिन गर्म रातों में तारे तेज़ी से चमकते थे.

जब वे बाहर अपने माता-पिता की गोद में बैठते तो बेल और पीटर तारों को चमकते हुए देखते थे.

माउ-माऊ और बोमफ्री, अपने मालिक हार्डेनबर्ग के लिए काम करने के बाद थक गए थे.

बेल और पीटर भी थके हुए थे.

यहां तक कि गुलामों के छोटे बच्चों को भी काम करना पड़ता था.

लेकिन बच्चे अभी भी कहानियों से नहीं थके थे.

बोमेफ्री ने उन्हें अपने सभी खोए हुए बच्चों की कहानियां सुनाईं.

उसके बड़े बच्चे, हर्ले से बहुत दूर दूसरे मालिकों को बेच दिए गए थे.

वे बरसों पहले बिक गए थे.

बेल अपने बिके भाई-बहनों को, रात में सुनाई गई कहानियों के जरिए ही जानती थी.

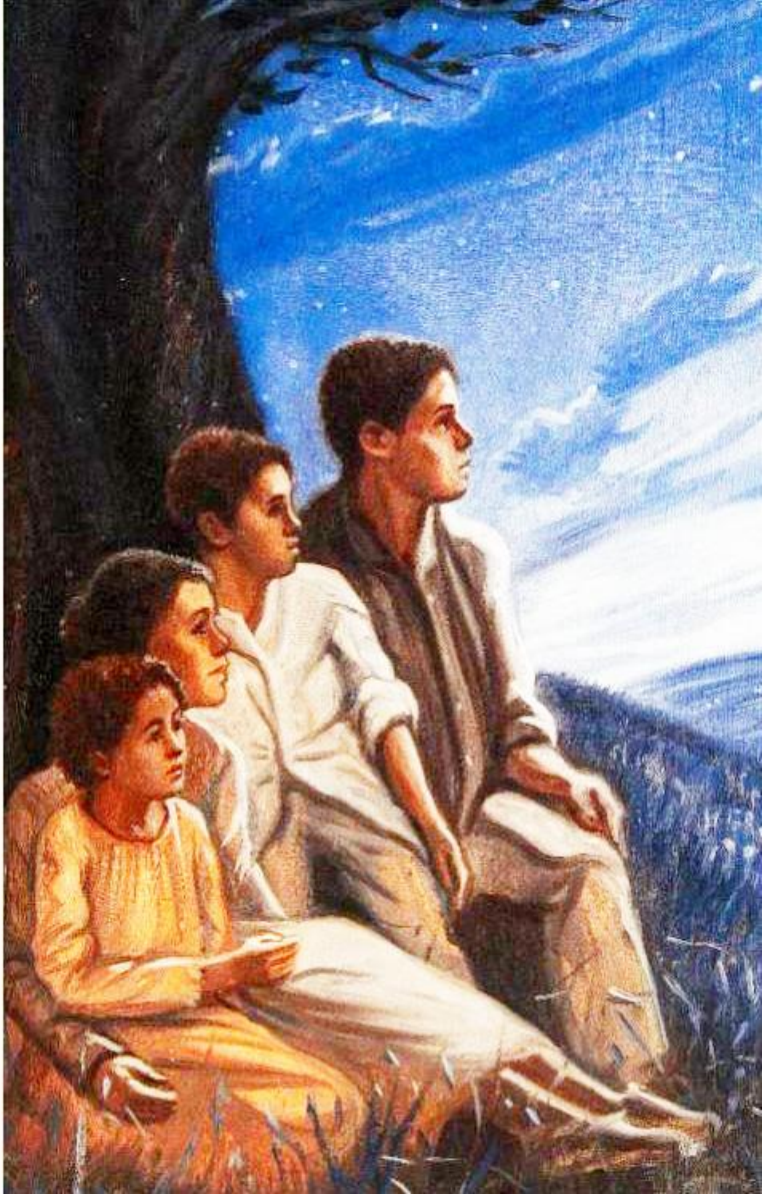

बेल की माँ ने भी कहानियाँ सुनाईं.

"मेरे बच्चों," वो कहती, "एक ईश्वर है जो तुम्हें देख और सुन रहा है."

बेल जब माउ-माऊ को आकाश में रहने वाले ईश्वर के बारे में बताते हुए सुनती, तो उसे बहुत अच्छा लगता था.

"वो हमेशा तुम्हारी बात सुनेगा और तुम्हारी मदद करेगा," माउ-माऊ कहती थीं.

मालिक के मरने के बाद बेल ने माउ-माऊ के दोस्त भगवान के बारे में सोचा.

एक अन्य मालिक फैनर जॉन नेली ने, हार्डेनबर्ग से, बेल के साथ कुछ भेड़ें खरीदीं. किसी अन्य मालिक ने पीटर को खरीदा. लेकिन माउ-माऊ और बोमफ्री पर, किसी ने बोली नहीं लगाईं क्योंकि वे बहुत बूढ़े या जवान थे. फिर उन्हें अकेले ही रहने के लिए छोड़ दिया गया. उनके पास काम करने या रहने के लिए कोई जगह नहीं थी. तब बेल शायद ही कभी किसी से मिलती थी, क्योंकि वो बहुत व्यस्त रहती थी.

बेल, भगवान से बात करती थी. उसे लगता था कि उसके मालिक नीली, उन बातों को सुन नहीं पाएंगे. पर उसे यह पक्का पता नहीं था कि क्या भगवान ने उसकी बात सुनी थीं.

लेकिन एक दिन एक आदमी उसे खरीदने के लिए आया.

नए मालिक ने उसके काम को पहले से ज्यादा कठिन बना दिया. लेकिन उसने उसे पीटा नहीं.

नए मालिक ने उसके साथ इतना अच्छा व्यवहार किया कि बेल को लगा कि भगवान ने उसकी बात ज़रूर सुनी होगी.

बेल केवल नौ वर्ष की थी लेकिन वो दिन भर कड़ी मेहनत करती थी.

वो अपने नए मालिक और मालकिन को खुश करने की पूरी कोशिश करती थी.

उसके मालिक और मालकिन केवल अंग्रेजी बोलते थे. और बेल सिर्फ डच जानती थी.

बेल जो भी गलत करती थी, उनमें से आधी गलतियाँ उसे समझ में ही नहीं आती थीं.

बेल को सुधारने के लिए मालिक उसकी जमकर पिटाई करता था. बेल उसे कभी नहीं भूली.

स्वतंत्रता की खोज

जब बेल 13 वर्ष की हुई, तब उसे दूसरे मालिक को बेच दिया गया.

नए मालिक जॉन ड्यूमॉन्ट को, अपनी युवा दासी पर गर्व था.

बेल एक बड़े आदमी जितना काम करती थी.

जल्द ही बेल लगभग छह फीट ऊंची हो गई. उसका डील-डॉल देखने में किसी आदमी जैसा ही था.

बेल अभी भी एक किशोरी थी जब उसके पहली बच्ची, डायना का जन्म हुआ था.

मास्टर ड्यूमॉन्ट प्रसन्न हुआ.

बच्ची, मालिक की संपत्ति थी. वो उसे रख सकता था या बेच सकता था.

जल्द ही बेल के दो और बच्चे हुए - पीटर और एलिजाबेथ, जिससे मालिक और भी खुश हुआ.

तभी बेल ने आजादी की खबर सुनी.

न्यूयॉर्क राज्य के सब गुलाम अब मुक्त होने वाले थे.

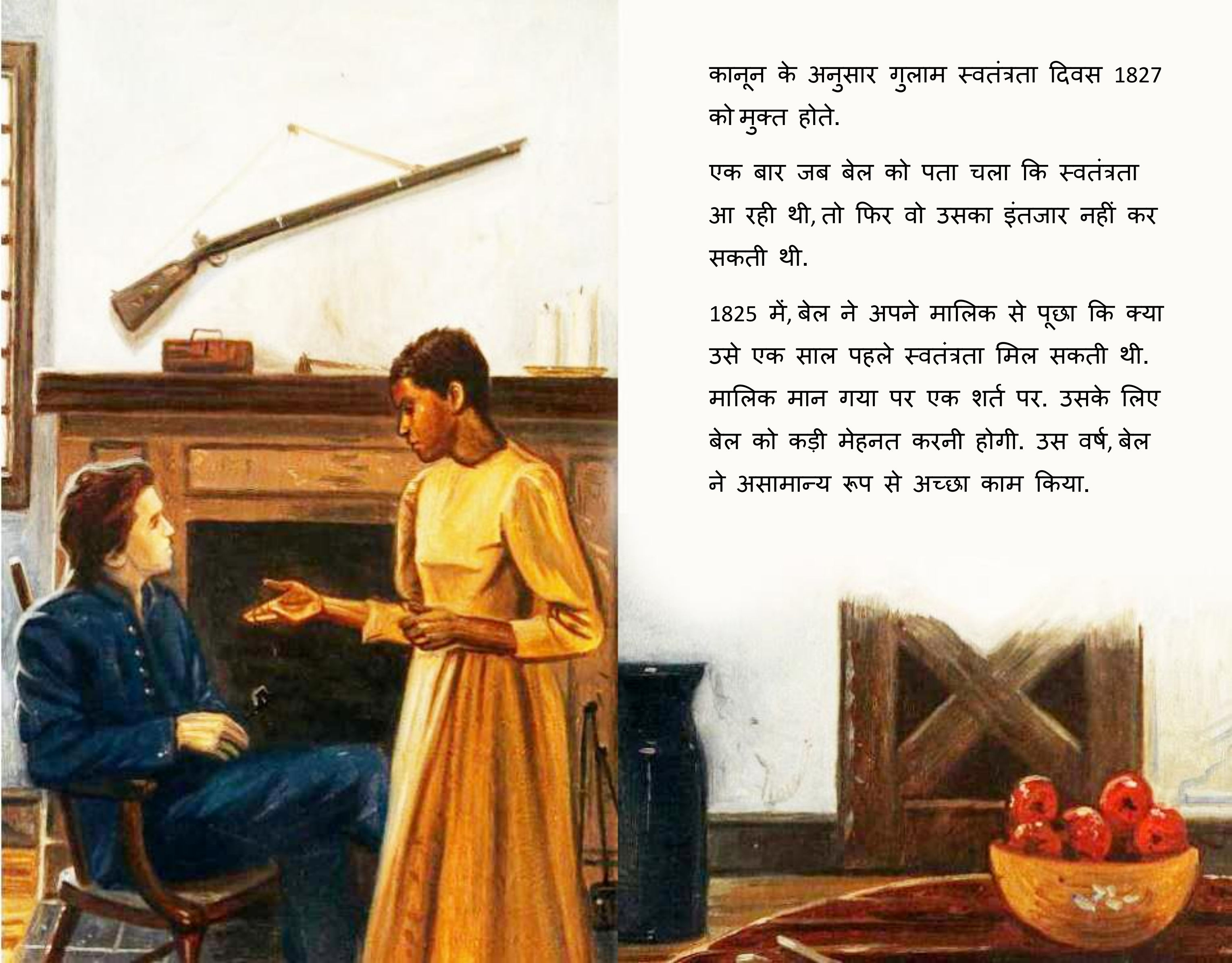

कानून के अनुसार गुलाम स्वतंत्रता दिवस 1827 को मुक्त होते.

एक बार जब बेल को पता चला कि स्वतंत्रता आ रही थी, तो फिर वो उसका इंतजार नहीं कर सकती थी.

1825 में, बेल ने अपने मालिक से पूछा कि क्या उसे एक साल पहले स्वतंत्रता मिल सकती थी. मालिक मान गया पर एक शर्त पर. उसके लिए बेल को कड़ी मेहनत करनी होगी. उस वर्ष, बेल ने असामान्य रूप से अच्छा काम किया.

उसने कटे गेहूँ को बाँधा और मालिक की गाड़ी लादी.

उसने मालकिन के कपड़े धोए और खाना बनाया.

उसने भेड़ों का ऊन काटा और ऊन कातकर धागा बनाया.

फिर बेल के मुक्त होने का समय आया. लेकिन उसका मालिक अपने वादे से मुकर गया.

बेल ने दिखा दिया था कि वो कितना कुछ कर सकती थी. फिर मालिक भला उसे कैसे जाने देता?

पर बेल को आजादी से ज्यादा, सच्चाई से प्यार था.

बड़े दुख की बात थी कि उसके मालिक ने उससे झूठ बोला था.

स्वतंत्रता दिवस के बीतने पर भी, एक गुलाम बने रहकर बेल दुखी हुई. फिर बेल ने वही किया जो माऊ-माऊ ने उससे सालों पहले करने को कहा था.

उसने परमेश्वर से बात की, जो आकाश में रहता था.

भगवान की मदद से, बेल ने अपना मन बना लिया.

वो अब मालिक के मुक्त करने की प्रतीक्षा नहीं करेगी.

वो अपनी मुक्ति के लिए न्यूयॉर्क राज्य की भी,
प्रतीक्षा नहीं करेगी.

एक दिन सुबह तड़के बेल उठी. तब पत्ते रंग बदल रहे थे.

उसने अपने बड़े बच्चों को नहीं जगाया.

वो जल्द ही उन्हें वापस ले जाने की उम्मीद कर रही थी.

फिर उसने अपने नए बच्चे को एक हाथ में ले लिया.

दूसरे में उसने कपड़ों और खाने की एक बोरी उठाई.

मालिक के जागने से पहले ही बेल घर से निकल गई.
अब वो आजाद थी.

एक नया नाम ढूँढना

बेल को इस बात का नहीं पता था कि उसकी यात्रा बहुत लंबी होगी.

कुछ समय के लिए, वो न्यूयॉर्क शहर में रही और वहां उसने एक नौकरानी का काम किया.

लेकिन बेल हमेशा के लिए नौकरानी नहीं बनी रहना चाहती थी.

लोगों को भगवान से कैसे बात करना चाहिए, वो बेल लोगों को सिखाना चाहती थी.

फिर उसने एक उपदेशक बनने का सपना देखा.

यदि कोई बाइबल नहीं पढ़ सकता था तो फिर उसके लिए प्रचार करना कठिन था.

बेल ने कभी पढ़ना ही नहीं सीखा था. कोशिश करने के बाद भी वो पढ़ने में असफल रही थी.

"मेरे सारे अक्षर आपस में मिल जाते थे," उसने कहा, "और फिर मैं उन्हें सीधा नहीं कर पाती थी."

बेल ने अन्य लोगों से उसे बाइबल पढ़कर सुनाने को कहा.

लोगों ने बाइबल पढ़ी पर उन्होंने बेल को अपनी सोच बताई और सिखाई.

लेकिन बेल अपना खुद का मन बनाना चाहती थी.

फिर बेल ने बच्चों से उसे बाइबल पढ़कर सुनाने को कहा.

पर बच्चों ने उसे कभी नहीं बताया कि वो क्या सोचे.

1843 तक, बेल 40 वर्ष से अधिक की हो चुकी थी. वो अब प्रचार करने को तैयार थी. वो न्यू यॉर्क के ब्रुकलिन के लिए एक नाव लेकर गई. रास्ते में, उसने अपने नए जीवन में फिट होने वाला एक नया नाम खोजा.

"सोजॉर्नर" एक ऐसा घुमक्कड़ व्यक्ति होता है जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है.

बेल का मानना था, कि भगवान ने उसे खुद "सोजॉर्नर" नाम सुझाया था.

"क्योंकि," उसने कहा, "मुझे ज़मीन पर ऊपर-नीचे यात्रा करनी थी."

लेकिन मुक्त लोगों के दो नाम होते थे.

जब वो लांग आईलैंड में प्रचार कर रही थी, तब उसने अपना उसने अंतिम नाम "ट्रुथ" चुना.

"क्योंकि," उसने कहा, "मुझे लोगों को सच बताना था."

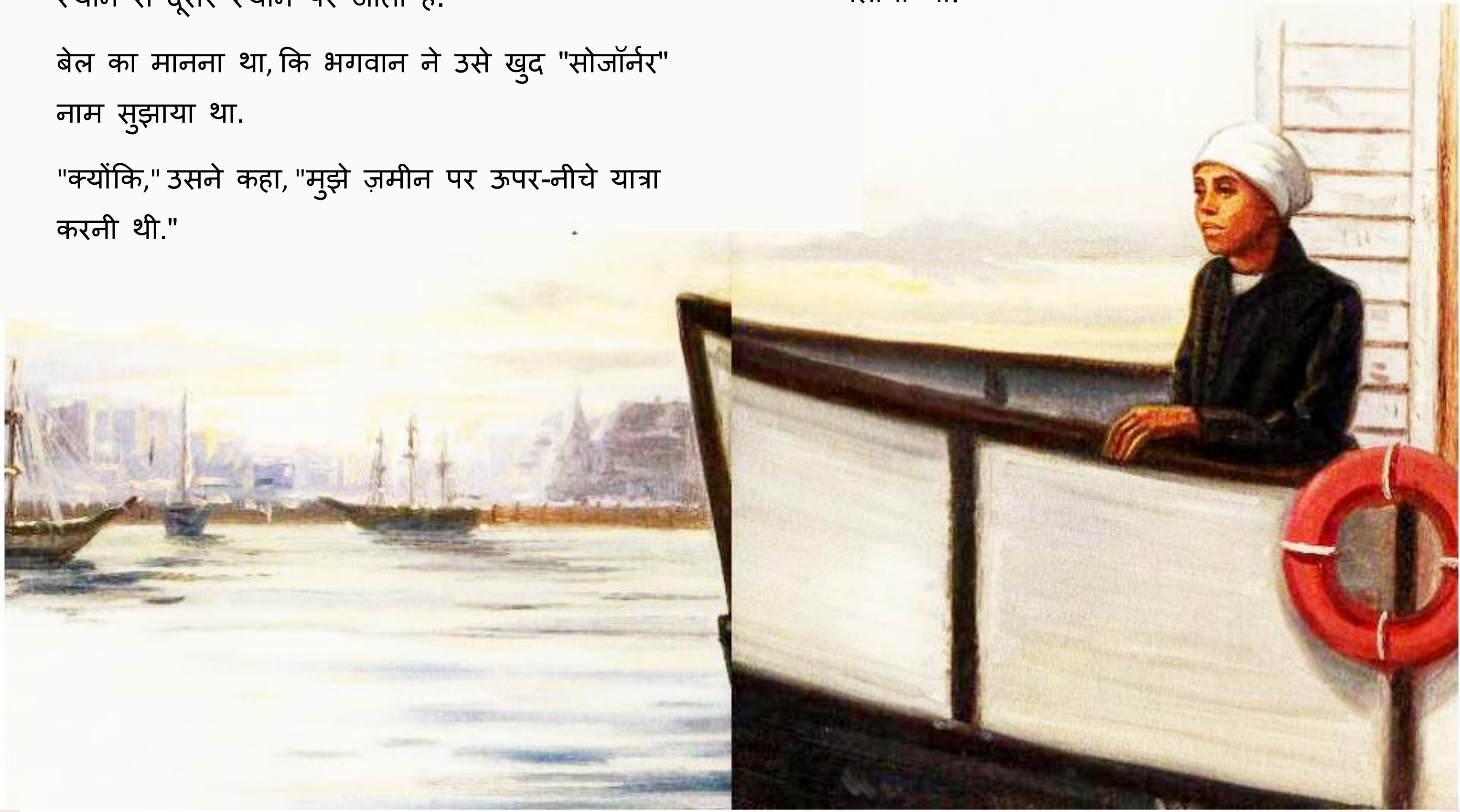

जब वो प्रचार कर रही थी, तब दुनिया तेज़ी से बदल रही थी. 1850 तक, उत्तर में दासता समाप्त हो गई थी. लेकिन दक्षिण में गुलामी अभी भी मजबूत थी. दक्षिण में, गुलाम परिवारों को अभी भी तोड़ा जा रहा था.

दास अभी भी पीटे जा रहे थे. गुलाम अभी भी आजादी के सपने देख रहे थे.

ज्यादातर लोगों को लगता था कि महिलाओं को घर पर ही रहना चाहिए.

ज्यादातर लोगों को नहीं लगता था कि किसी गुलाम की बात सुनने लायक होगी.

लेकिन सोजर्नर ट्रुथ की एक बुलंद आवाज थी और उसका भगवान में दृढ़ विश्वास था.

जल्द ही उसने अपने आसपास भीड़ जमा कर ली.

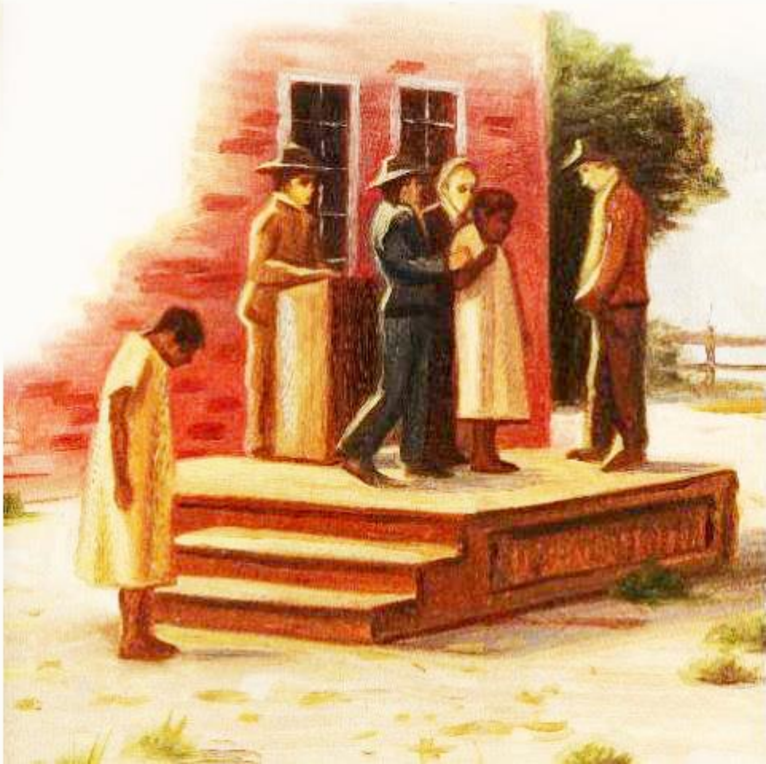

उत्तर में कुछ लोगों ने मदद करने की कोशिश की.

उन्होंने गुलामी की भयावहता के बारे में चर्चा की.

उन्होंने गुलामी को खत्म करने मांग की.

वहां पर अधिकांश वक्ता गोरे लोग थे.

लेकिन सोजर्नर ट्रुथ वैसी नहीं थी. वो अश्वेत थी.

उसने गुलामी की असलियत झेली थी.

सोजॉर्नर, दासता की सच्चाई को पूरे देश के सामने लाई.

उसने लोगों को अपनी पीठ पर मालिक के चाबुक की मार के बारे में बताया.

लेकिन वो उन्हें याद करके रोई नहीं. वो ऊंची और गर्वीली होकर खड़ी रही. उसने एक सादे गहरे रंग की पोशाक पहनी थी और उसके सिर पर एक सफेद पगड़ी बंधी थी.

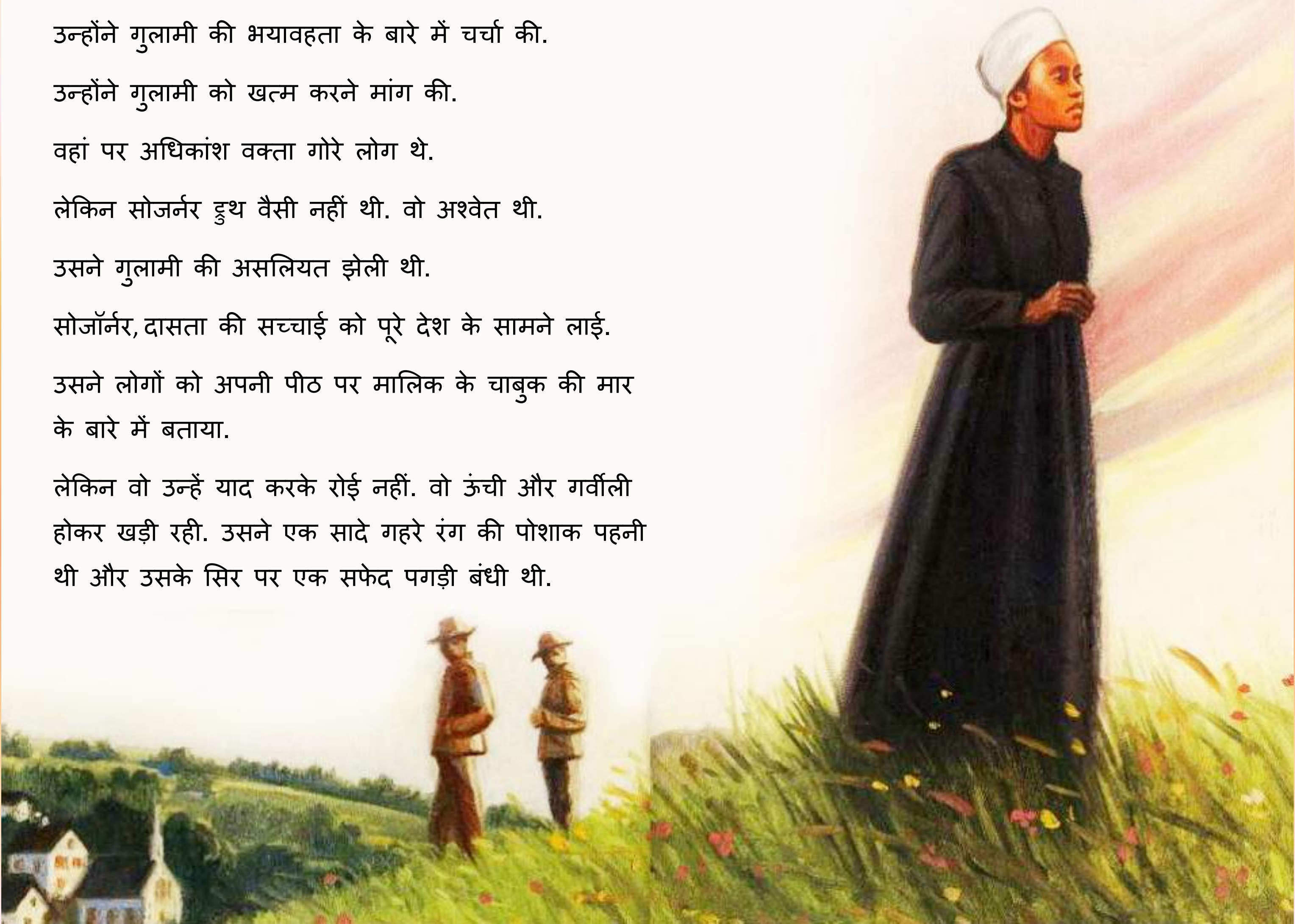

अपने भाषणों से सोजॉर्नर ट्रुथ ने लोगों को सोचने पर मजबूर किया. वो कभी-कभी लोगों को हंसाती भी थी. वो भगवान के भजन और गीत गाती थी. "हर दिन मुसीबत में," उसने गाया, मैं अपने विचारों को और ऊँचा उठाऊँगी." शायद दूसरे लोग इसे बेहतर व्यक्त कर पाते.

लेकिन कोई भी सोजॉर्नर ट्रुथ की तरह उस भाव को व्यक्त नहीं कर पाया.

"जीवन वैसे भी एक कठिन लड़ाई है," उसने अपने एक दोस्त से कहा, "पर अगर हम स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ते समय थोड़ा हँसेंगे-गाएंगे तो फिर काम कुछ आसान हो जायेगा."

यात्रा पर

सोजॉर्नर ट्रुथ ने गुलामी के खिलाफ बोलते हुए हजारों मील की यात्रा की. लेकिन दासता ही उसे एकमात्र गलत बात नहीं दिखती थी. मुक्त महिलाएं - चाहें वो काली हों या गोरी - उनके साथ पुरुषों जैसा व्यवहार नहीं किया जाता था.

स्वतंत्र महिलाएं मतदान तक नहीं कर सकती थीं. कई राज्यों में, महिलाएं किसी संपत्ति की मालकिन तक नहीं बन सकती थीं.

समान काम के लिए पुरुषों की तुलना में महिलाओं को कम वेतन मिलता था. जल्द ही सोजॉर्नर, महिलाओं के अधिकारों की पैरवी कर रही थीं.

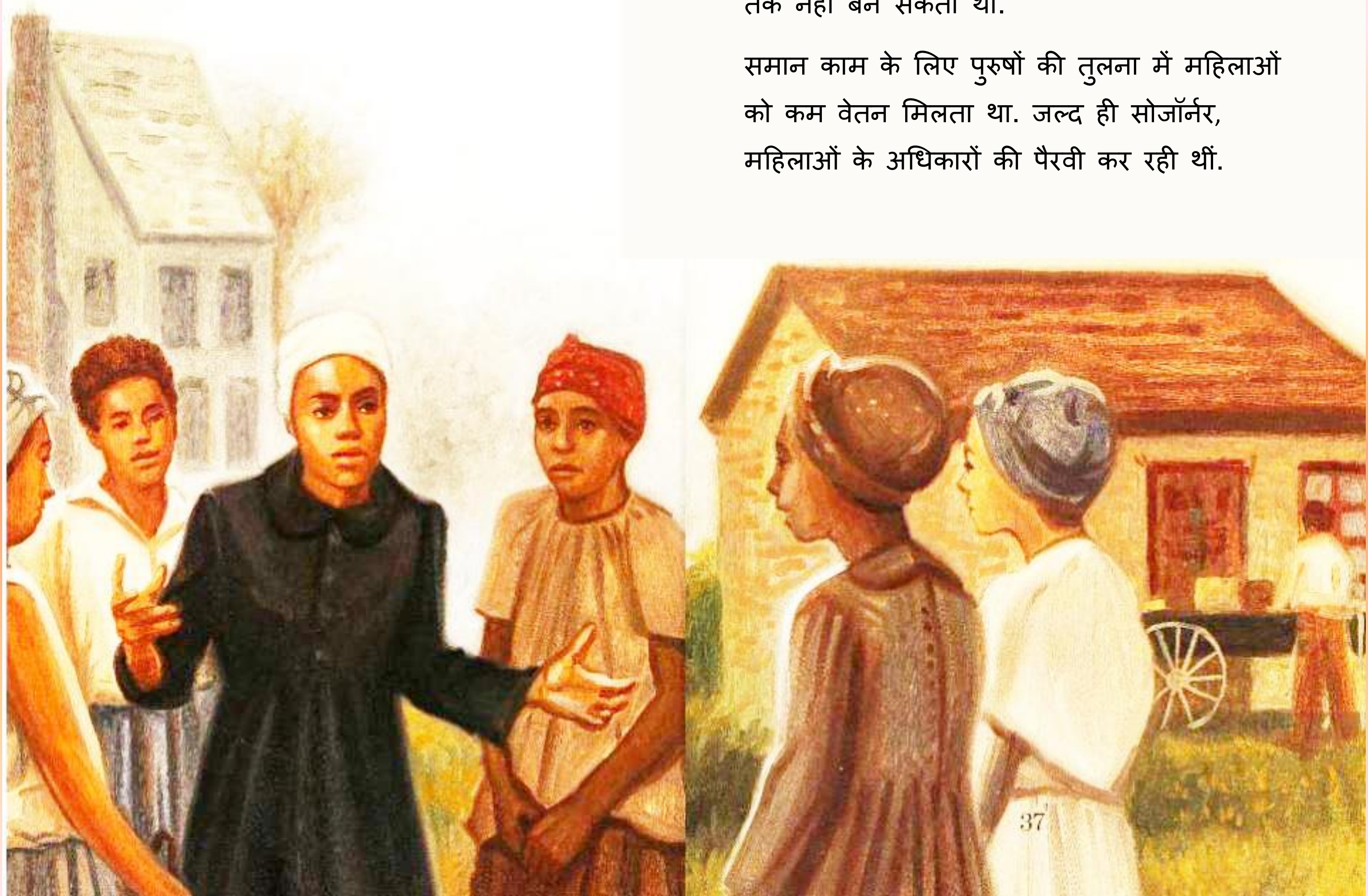

कई पुरुषों का मानना था कि महिलाएं कमजोर होती थीं और उन्हें पुरुषों के बराबर वेतन नहीं मिलना चाहिए था. लेकिन सोजॉर्नर ट्रुथ ने अपने हाथ उठाकर लोगों को अपनी मजबूत मांसपेशियां दिखाईं. उन्होंने कहा, "मैंने हल चलाया है, ज़मीन जोती है और फसल काटी है और अनाज साफ़ किया है. क्या कोई मर्द मुझसे ज्यादा काम कर सकता है?"

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वो कहाँ थी. सोजॉर्नर ने हर जगह लोगों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी.

वाशिंगटन, डीसी में, अश्वेत यात्रियों के लिए घोड़ागाड़ियाँ रुकती नहीं थीं. पर सोजॉर्नर ट्रुथ नहीं रुकी. वो घोड़ागाड़ियों के पीछे भागी. वो तब तक चिल्लाती रही जब तक घोड़ागाड़ियाँ रुकी नहीं.

सोजॉर्नर ने और अन्य लोगों ने, घोड़ागाड़ियों को सभी यात्रियों के लिए रुकने को मजबूर किया.

वाशिंगटन की सड़कों पर चलते समय, सोजॉर्नर ने इमारतों और स्मारकों को नहीं देखा. उन्होंने घोड़ागाड़ियों पर सवार लोगों को देखा. "घोड़ागाड़ियों के अंदर," उन्होंने खुशी से कहा, "अब लोग, काली मिर्च (काली) और नमक (सफ़ेद) की तरह लग रहे थे."

1920 में, सोजॉर्नर ट्रुथ की मृत्यु के बहुत लंबे अर्से बाद ही महिलाएं मतदान कर सकीं. महिलाओं को अभी भी समान काम के लिए, पुरुषों की तुलना में कम वेतन मिलता है. लेकिन असफलताओं और दुखों ने सोजर्नर ट्रुथ को कभी रोका नहीं.

पर हर लड़ाई इतनी आसान नहीं होती है.

गुलामी तब तक समाप्त नहीं हुई जब तक कि एक लंबे और भयानक युद्ध ने, देश को लगभग अलग-थलग नहीं कर दिया.

1857 में, उन्होंने अपनी बड़ी बेटियों के साथ रहने के लिए अपना खुद का एक छोटा सा घर खरीदा.

लेकिन सोजॉर्नर फिर भी यात्रा करती रहीं और लड़ती रहीं.

उनके लिए काम करना आसान नहीं था.

और उन्होंने जिस सड़क पर यात्रा की वो लंबी और कठिन थी.

लेकिन मरते दम तक, सोजर्नर ट्रुथ ने लोगों को सच्चाई से वाकिफ कराया.

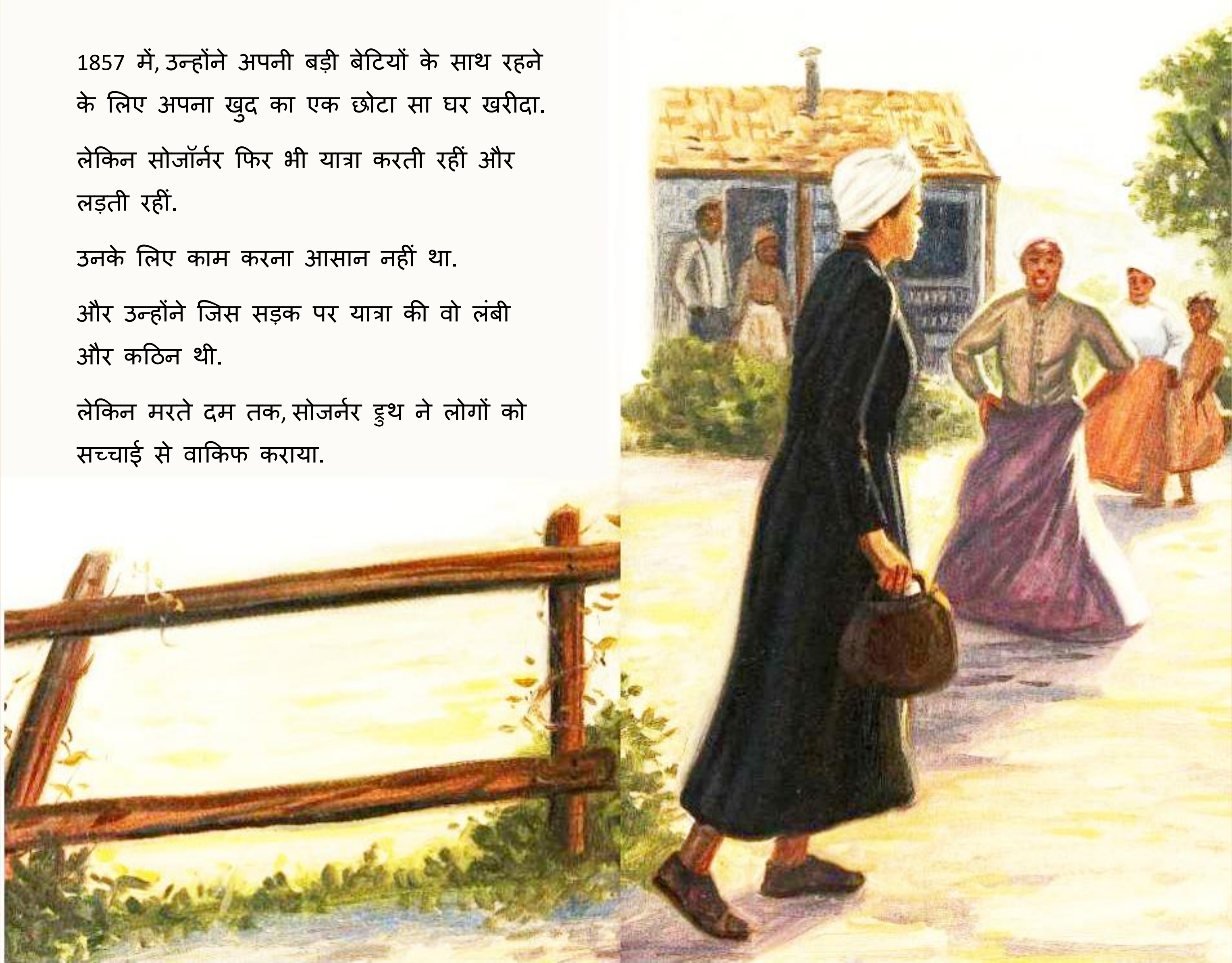

अंत के शब्द

सोजॉर्नर ट्रुथ एक असाधारण महिला थीं. उनके समय में, बहुत कम महिलाएं हीं सार्वजनिक रूप से भाषण देती थीं. उनके पहले शायद किसी भी पूर्व दास ने, कभी भाषण नहीं दिया था. उत्तर और दक्षिण के बहुत कम गोरे यह सोचते थे कि काले दासों के पास कुछ सार्थक कहने को होगा. आखिर सोजॉर्नर ट्रुथ जैसे गुलाम एकदम अशिक्षित थे. लेकिन सोजॉर्नर ट्रुथ ने कभी भी अपने लिंग, शिक्षा की कमी, या त्वचा के रंग को, आड़े आने नहीं दिया. उन्हें कोई रोक नहीं सकता था. वो अपने समय से अब तक के लोगों के लिए एक प्रेरणा हैं.

सोजॉर्नर ट्रुथ के काल में रेडियो या टेलीविजन नहीं थे, इसलिए हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं कि उन्होंने क्या कहा होगा और वो एक वक्ता के रूप में कैसी दिखती होंगी. लेकिन जिन लोगों ने उन्हें सुना, वे उनके शब्दों की सरल शक्ति, उनके लंबे डील-डौल और उनके अच्छे हास्य से अभिभूत थे. "मैं चिट्ठियों जैसी छोटी चीजें नहीं पढ़ती हूँ," उन्होंने एक बार कहा, "मैं लोगों और राष्ट्रों को पढ़ती हूं." सोजॉर्नर ट्रुथ लिखित शब्द पढ़ने में अक्षम हो सकती थीं लेकिन वो लोगों को पढ़ने और समझने में माहिर थीं. बोलते समय वो लोगों को खुद के एक दास और एक महिला के रूप में झेले गए कटु अनुभवों के बारे में बताती थीं. वो हमेशा अपने साथी अमेरिकियों से, स्वतंत्रता, न्याय और निष्पक्षता की "अच्छी लड़ाई लड़ने" का आग्रह करती थीं.

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1797—इसाबेला का जन्म लगभग इसी समय जेम्स (बोमफ्री) और एलिजाबेथ (माऊ-माऊ) के घर हर्ले, न्यूयॉर्क में हुआ था. क्योंकि वो एक गुलाम थीं, इसलिए उनके जन्म का कोई आधिकारिक रिकॉर्ड नहीं है.

1806—बेल, किंग्स्टन, न्यूयॉर्क में जॉन नीली की दास बनीं.

1810-26 — बेल, न्यू पाल्ट्ज, न्यू यॉर्क के जॉन ड्यूमॉन्ट का दास बनीं. उन्होंने शादी की और पांच बच्चों को जन्म दिया, जिनमें से एक बच्चा मर गया.

1826 के पतझड़ में, उन्होंने अपने सबसे छोटे बच्चे को लेकर स्वतंत्रता के लिए पलायन किया.

1827—4 जुलाई को, न्यूयॉर्क के सभी दास आधिकारिक रूप से मुक्त हुए.

1829-13 — पूर्व दास बेल ने न्यूयॉर्क शहर में, एक नौकरानी के रूप में काम किया और एक उपदेशक बनने की तैयारी की.

जून 1843 में, उन्होंने सोजॉर्नर ट्रुथ नाम का उपयोग करते हुए, उपदेश देना शुरू किए.

1850 — सोजॉर्नर ने दासता और महिलाओं के अधिकारों के खिलाफ बोलना शुरू किया. उन्होंने अपने जीवन की कहानी भी प्रकाशित की, जिसका शीर्षक था "नैरेटिव ऑफ़ सोजॉर्नर ट्रुथ".

1857 — सोजॉर्नर ने बैटल क्रीक, मिशिगन के पास एक घर खरीदा.

1865 — सोजॉर्नर ने काले यात्रियों के लिए वाशिंगटन, डीसी में घोड़ागाड़ियों को रुकने के लिए मजबूर किया.

1879 — पूर्व दक्षिणी दासों को वहां पर नए जीवन का निर्माण करने में मदद के लिए सोजॉर्नर ने कान्सास की यात्रा की.

1883 — सोजॉर्नर ट्रुथ का 26 नवंबर को मिशिगन के बैटल क्रीक में उनके घर पर निधन हो गया.